शबरी बनकर

शबरी बनकर के अयोध्या
सदियों से निहार रही थी
आयेंगे श्रीराम एक दिन
राह रोज बुहार रही थी
दिखने लगे हैं सगुन खूब
जंगल मंगल होने लगे हैं
मुस्कराने लगी दिशाएं
फूल अब खिलने लगे हैं
होने लगा है भान उसको
लगता आ रहे राम प्यारे
भक्तवत्सल करुणानिधि
जो जी रही जिनके सहारे
बूढ़े तन में शक्ति आई
हाथ बजन उठा रहे हैं
राम आ रहे राम आ रहे
बोल उसके गा रहे हैं
पैर में थिरकन मची है
बूढ़ी आंखों में चमक है
पदचाप राम के आने की
कानों में आ रही धमक है
शबरी सम जिया जीवन
अयोध्या ने भी की प्रतिक्षा
राम आते हैं अवश्य भक्तों
देते ये पल सबको शिक्षा।

व्यग्र पाण्डे

जीवन मूल्य हैं राम हमारे

कल्पनाएं साकार होंगी
अभिलाषाएं आकार लेंगी
करवटें लें रही हैं सदियां
झालर भी अब झंकार देंगी
मंदिर प्रभु का बन गया है
गर्व से सर तन गया है
धन्य चौबीस जनवरी बाइस
मन खुशियों में सन गया है
स्वर्ग भी लजा रहा होगा
देख मंदिर की भव्यता को
विश्व भी अब चकित है
लख अवध की नव्यता को
वनवास सदियों का बिताकर
धन्य अवध फिर राम पाकर
आओ करें स्वागत प्रभु का
वंदन करें सब सिर नवाकर
गली मौहल्ले खूब सजाएं
घर घर खुशी के दीप जलाएं
बाइस जनवरी को हम सारे
फिर से दीपावली मनाएं
कितने बलिदानों को देकर
कितने अपमानों को सहकर
पहुंचे हैं सदियों में यहाँ तक
देखा सब सरयू ने बहकर
अब ना कोई करे दुस्साहस
ऐसे यत्न सदा रखने हैं
जीवन मूल्य हैं राम हमारे
सदा पास हमको रखने हैं

कर्मचारी कालोनी, बचपन स्कूल के पास, गंगापुर सिटी

ISSN:2583-8849